Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 01-04-2020; Accepted: 15-04-2020; Published: 02-05-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 38-43

सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण: मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार - आत्मा के अमरत्व के संदर्भ में एक मौलिक अध्ययन

मेधावी शुक्ला
अनुसंधान अध्येता, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध आलेख में मानवीय प्रवृत्तियों के उन पक्षों की विवेचना करने का प्रयास किया गया है जिससे मानवता के उच्च शिखर पर पहुँचने का व्यावहारिक स्वरुप , प्रामाणिकता से मुखरित किया जा सके । मनुष्य जीवन की प्राप्ति होना व्यक्ति के लिए एकांगी स्थिति का प्रतीक नहीं , लेकिन इस बहुमूल्य जीवन का सर्वांगीण विकास करने की इच्छा शक्ति में जीवन - दर्शन , जीवन - उत्साह एवं जीवन - लक्ष्य का समायोजन बहुआयामी चिन्तन का विराट स्वरुप है । स्वयं को धरती पर विचरण करने की मंसा से उपर उठकर निजी जीवन की मनोवृत्ति से श्रेष्ठ कर्म करने की आत्मिक स्थिति , व्यक्ति को सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण करने के लिए अभिप्रेरित करती है । इस विषय की मौलिकता का स्तर उस समय बढ़ जाता है जब आत्मा के अजर , अमर एवं अविनाशी स्वरुप की अनुभूति पूर्णतया अमरत्व के सन्दर्भ में होती है और जीवन की गतिशीलता जो आत्मा के लिए नित्य , सत्य एवं प्रकाशवान है अर्थात् गुण , शक्ति और जीवन मूल्य की प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ की व्यावहारिकता में स्वयं को समर्पित कर देना है । जीवन की सहजता , सरलता एवं विनम्रता का स्वरुप , आत्म ज्ञान के व्यवहार में आने से सुनिश्चित हो जाता है जो व्यक्ति को आत्मिक उच्चता की प्राप्ति हेतु सत्कर्म की ओर अभिमुखित करता है । श्रेष्ठता की प्रवृत्ति में रूपांतरण हो जाने के पश्चात् जीवन में पवित्रता का ‘ अनुसरण होने के साथ - साथ अनुकरण भी ’ नियमित जीवन की सूक्ष्म स्थितियों में समाविष्ट हो जाता है । मनुष्य के द्वारा जीवन दर्शन के अध्यात्म को स्वीकार कर लेना इस सत्य की पुष्टि है जिसमें व्यक्तिगत जीवन में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संदर्भो की व्यावहारिक संकल्पना के प्रति गहरी आस्था का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है । इस प्रकार शोध आलेख का केन्द्रीय भाव मानव जीवन के द्वारा ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों से अच्छा देखना , अच्छा बोलना , अच्छा सुनना , अच्छा सोचना एवं अच्छा कर्म करना है क्योंकि स्वयं के सर्वांगीण विकास हेतु सत्कर्म की प्रवृति का अनुसरण करने के अतिरिक्त शेष कोई विकल्प नहीं है । आत्मा के द्वारा ‘ श्रेष्ठ संकल्प एवं श्रेष्ठ विकल्प ’ को उसकी ऊंचाई से निर्धारित कर लिया गया है जो जीवन की व्यावहारिकता को सर्वांगीण विकास से सम्बद्ध करके स्वीकारने में अपने विश्वास को व्यक्त करते हुए आत्मा के अमरत्व को ‘आत्म स्वरुप’ की श्रेष्ठ स्थिति के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी मानते हैं ।

मूल शब्द: उत्तरदायी, व्यावहारिकता, अनुकरण, कर्मेन्द्रियों

प्रस्तावना

जीवन के सर्वांगीण विकास का पक्ष: मानव जीवन में उपलब्धियों की प्राप्ति को सर्वोपरि स्वरुप में स्वीकार किया जाता है जो कई बार व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर प्राप्त होती हैं तथा जिन्हें सामान्यतः भौतिकता से जोड़कर देखा जाता है । विकास की प्रक्रिया में संतुलित रूप से जीवन को विकसित करने के मापदंड व्यक्ति के सम्मुख उपस्थित होते हैं और विभिन्न क्षेत्र विशेष का आवश्यकता के अनुसार ज्ञान को प्राप्त करना तथा स्वयं को मध्य में रखकर विधिवत तरीके से जीवन को पूर्ण करना ही व्यक्ति का उद्देश्य बन जाता है जिसके लिए उसके द्वारा यथा शक्ति प्रयास एवं संतुष्टि की स्थितियों का निर्माण किया जाता है । जीवन के सर्वांगीण विकास के पक्ष पर कार्य करने हेतु अपनी क्षमताओं की पहचान तथा उसके क्रमिक विकास में अकादमिक शिक्षा के साथ - साथ जीवन के अन्य पक्षों अर्थात् व्यावहारिक शिक्षा तथा अनुसंधान शिक्षा की

पूर्णता के अतिरिक्त एक ऐसी तकनीकी शिक्षा का विकास स्वयं की आवश्यकता , इच्छा एवं मन: स्थिति की अनुकूलता को ध्यान में रखकर ग्रहण करना जिससे स्वयं को व्यावहारिक स्वरुप में आनंद प्रदान किया जा सके । व्यक्तिगत जीवन की विश्लेषणात्मक शक्ति को स्वीकार करने पर पता चलता है कि किस प्रकार के पुरुषार्थ मनुष्य को स्वयं की संतुष्टता से सर्व की संतुष्टता तक पहुंचाते हैं और व्यक्ति जीवन के सर्वांगीण विकास के चरम लक्ष्य को प्राप्त करता हुआ स्वयं की व्यक्तिगत , पारिवारिक , सामाजिक , मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक , धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकास की यात्रा को कुशलता से पूर्ण कर लेता है। अब मनुष्य के सम्मुख एक प्रश्न उपस्थित होता है कि स्वयं के सर्वांगीण विकास की व्यक्तिगत स्थिति क्या सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण करने के लिए अंत: प्रेरणा प्रदान करती है ? जीवन दर्शन का अध्यात्म व्यक्ति को मन , बुद्धि एवं संस्कार के परिवर्तन से इतना सशक्त बनाना चाहता है कि व्यक्ति के कर्म , पुरुषार्थ एवं भाग्य का परिष्कार सुनिश्चित हो जाए तथा वह आत्मा की शक्ति को अनुभव कर सके। आध्यात्मिक विकास की पूर्णता को प्राप्त करने के लिए मनुष्य सत्कर्म की मूलभूत प्रवृत्तियों के अनुसरण की ओर इसलिए उन्मुख होता है क्योंकि उसे स्वयं के भीतर चेतना , चिन्तन एवं पुण्य का निर्माण करना होता है जिससे वह जीवन के सदगुणों को अपनाते हुए महान आत्मा , धर्मात्मा तथा देवात्मा की श्रेष्ठता से स्वयं को सुशोभित करते हुए स्वयं के जीवन को धन्यता में परिणित कर सके । जीवन के सर्वांगीण विकास का पक्ष इतना व्यापक होता है कि व्यक्ति के लिए सामाजिक संदर्भो की स्थित्ति इतनी बाध्यकारी होती है कि उसे चेतन , अवचेतन एवं अचेतन मन की गहराई में जाकर स्वयं को सक्षम बनाने के लिए लक्ष्य , उत्साह एवं जीवन दर्शन के यथार्थ को मनोवैज्ञानिक रूप से स्वीकार करना पड़ता है । कई बार बाह्य स्वरुप में ऐसा लगता है कि कुछ विशेष व्यक्ति ही क्यों सकारात्मक , समर्थ एवं महान चिन्तन की ओर प्रवृत्त होते हैं शेष नहीं और चाहकर भी वह ऐसी अवस्थाओं से नहीं गुजरते हैं ? अत: उन्हें श्रेष्ठ , शुभ एवं पवित्र विचार की उच्चता के संबंध में ज्ञान नहीं अथवा धर्मगत भाव और विचार पक्ष पुण्य कर्म के उदित नहीं होने के सत्य को प्रकट करते हैं जो 'पवित्रता' के अभाव को व्यवहार में दर्शा देता है और पुन: पुरुषार्थ के शक्तिशाली आयाम को अपनी ' साधना ' के द्वारा प्राप्त करके व्यक्ति सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण करने लगता है जो उसके सर्वांगीण विकास का आधार होता है ।

मानव के आगमन एवं प्रस्थान का बिंदु : व्यक्तिगत जीवन की कुशलता के प्रति सचेत रहने वाला सामाजिक परिवेश , यदा - कदा सुखद एवं दु:खद परिस्थितियों में इस सत्य की अभिव्यक्ति को प्रकट करने में नि:संकोच भाव को अपनाता है और प्राय: यह सम्प्रेषण विशेष महत्व देने की अपेक्षा के साथ किया जाता है कि - अपने इस जीवन काल में इतना कार्य क्यों कर रहे हो ? यदि जीवन में सब कुछ एकत्रित भी कर लिया, तो भी सब कुछ यहीं छोड़ कर एक दिन जाना है क्योंकि किसी ने सब कुछ प्राप्त कर भी लिया तो वह भी उससे मुक्त होकर जाता है अर्थात् कर्मजगत का प्रतिफल किसी के लिए स्थायी नहीं है । सामान्य जीवन के अंतर्गत किया गया कार्य कैसे किसी मनुष्य के लिए ' निष्काम कर्मयोग ' बन जाए तथा वह व्यक्ति ' एक योगी की भांति ' अपने जीवन को पूरी निष्पक्षता से जीने का प्रयास करे तथा एक दिन इससे अलग होने पर मोह की स्थित्ति निर्मित्त ही न हो अर्थात् पूर्णत: नष्टोमोहा का भाव उसके जीवन के लिए उन्मुक्तता से भरा हर क्षण एवं पल हो जिसे आत्मिक संतुष्टि के रूप में स्वीकार किया जा सके । स्वयं के जीवन में सर्वांगीण विकास का तथ्यगत स्वरुप प्रभावशाली होता है जिसमें आत्मा की कर्मगत पूंजी कार्य करती है तथा यह आभास सदा सत्य स्वरुप में अन्त:करण में विराजमान रहता है कि स्वयं को ' अवतरित व्यवस्था से मुक्ति की स्थिति तक ' के लिए तत्पर रखना है । जीवन में आत्मा का श्रेष्ठ मनोगत भाव तथा उससे संबद्ध स्थितियां व्यक्ति को सत्कर्म की प्रवृत्ति के अनुसरण एवं व्यावहारिक जीवन में अनुकरण करते हुए सम्पूर्ण विकास की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ की गुणात्मकता पर एकाग्रता से गतिशील रहने हेतु अभिप्रेरणा प्रदान करते हैं । स्वयं को ऊँचा उठाने या आगे बढ़ाने के कर्म में प्रवृत्त हो सदा कर्म करने का आनंद इतना असीम होता है कि उसके प्रतिफल पर आत्मा का ध्यान ही नहीं जाता , तब आत्मा बुद्ध एवं शुद्ध स्थिति का अनुभव करती है जिसके लिए उसका आगमन हुआ है । जीवन की विविधता को निजता के परिप्रेक्ष्य में जब व्यक्ति अवलोकन करता है तब उसे ज्ञात होता है कि जीवन जीने की दिशा एवं दशा की क्या स्थिति है क्योंकि यहाँ स्वयं का मूल्यांकन एवं परिवर्तन करना आसान हो जाता है । किसी भी धर्म की गूढ़ता व्यक्ति को सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से मदद करती है क्योंकि कर्मजगत के परिवेश में निष्पक्षता से गुणात्मक कार्य हेतु जिस मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है वह आत्मा को धर्म के मार्ग पर गतिशील रहकर ही प्राप्त हो पाता है । सर्वांगीण विकास की प्रासंगिकता जीवात्मा के लिए उद्देश्यपूर्ण स्थिति होती है जो जीवन को आध्यात्मिक जगत से संचालित करती है क्योंकि अध्यात्म के साथ पुरुषार्थ का अति सूक्ष्म पक्ष जिसमें ' आत्मिक विकास की सम्पूर्णता ' अपने उच्च स्वरुप में कार्यरत रहती है । जीवन की पूर्णता के लिए जब व्यक्ति राजयोग की ओर उन्मुख होता है तब उसे उपराम एवं वैराग्य को स्वीकार करना पड़ता है क्योंकि आत्मा के सुखांत की स्थितियां ' मस्तिष्क के वैचारिक झंझावात से जुड़े बन्धनों तथा हृदय की भावनात्मक पीड़ा से सम्बद्ध संबंधो' को आत्मा से अलग देखती

हैं और 'आत्म सत्ता एवं परमात्म सत्ता' के संयोग को एक शक्तिशाली स्वरुप में अभिव्यक्त करती हैं । स्वयं की गहन अनुभूति के साथ आत्मा के अमरत्व का बोध हो जाना वह भी आत्मा के आगमन एवं प्रस्थान के सन्दर्भ में , जिससे आत्मिक विकास को पूर्णता प्रदान करते हुए सर्वांगीण विकास तक आत्मा को पुरुषार्थ से स्थापित कर देना व्यक्तिगत उत्थान का द्योतक है जिसे ' आत्म – सम्मान ' के रूप में गौरव के साथ स्वीकार करना न्याय संगत होगा ।

सत्कर्म की प्रवृत्ति का उत्कृष्ट साधन : मानव जीवन में स्वयं के उत्कर्ष हेतु सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण करना जिसमें ' साधन भी उत्कृष्ट अर्थात् पवित्र हों ' क्योंकि निजी जीवन को दिलासा देने की सामान्य आदत व्यक्ति को कार्य संतुष्टता तक सीमित कर देती है । यदि हम अपने कार्य को संतुष्टि के संदर्भ तक मूल्यांकित करते रहे तो यही व्यवहार दूसरों के समान मेरे भी व्यवहार में समाने लगेगा जिसका परिणाम ' कार्य संतोष जनक ' है तक स्वयं को सीमांकित कर देने की प्रवृत्ति जीवन पर्यंत बनी रहेगी । जीवन के प्रति अच्छी सोच व्यक्ति के मानस को अच्छा , बेहतर , बहुत अच्छा से आगे बढ़ने में सहायक होती है और वह एक दिन ' उत्कृष्ट सोच ' की स्थित्ति में परिवर्तित हो जाती है जिसका परिणाम ' स्वयं के उत्कर्ष ' अर्थात् निजी जीवन की ऊंचाई के रूप से व्यक्ति द्वारा अनुभव किया जाता है । जगत के व्यावहारिक रूप को स्थूलता से जुड़ा मानने के साथ - साथ सूक्ष्मता को भी स्वीकार करना आवश्यक है तथा मानवीय प्रवृत्तियों का अध्ययन जिसमें सत्कर्म की प्रवृत्ति के अनुसरण का प्रसंग और व्यक्ति द्वारा उत्कृष्ट साधन अपनाने के लिए सूक्ष्म प्रेरणा मानव को प्रदान करना , आत्मा के प्रति श्रेष्ठ दायित्व बोध का परिणाम है । मानवीय प्रवृत्तियों पर दानवीय प्रवृत्तियों का सतत दबाव जिसमें सत्य - असत्य का आंतरिक विरोधाभास , मैं - पन की जिद्द का अभिमान युक्त दबाव , पक्षपातपूर्ण रवैया की स्थित्ति , पूर्वाग्रह से ग्रसित बीमार मानसिकता की पीड़ा तथा किसी भी सत्य के घटने से पूर्व उसकी सफलता एवं असफलता का भय जो अब पूर्वानुमान के रूप में मस्तिष्क को नियंत्रित करके बैठ गया है इत्यादि भावनात्मक एवं वैचारिक समस्याएं , सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण करते हुए उत्कृष्ट साधन अपनाने में बाधा बन जाती हैं । समाज में रहते हुए जीव - जगत के संबंधों में कुछ समय पश्चात् कहीं कठिनाई उत्पन्न हुई जिससे विधिवत अर्थात् संतुलित सामाजिक व्यवस्था में निराशा निर्मित्त होने के साथ मानव व्यवहार में जीव जंतुओं से सहानुभूति की बजाए हिंसक प्रवृत्ति उन्हें पूर्णत: नष्ट करने में संलग्न हो गई और व्यक्ति खाद्य एवं अखाद्य के अंतराल को समाप्त कर पूर्णतया पशुवत व्यवहार (हिंसा) पर उतारू होकर स्वयं के मनुष्य होने पर स्वयं ही प्रश्न चिह्न लगा बैठा ? अहिंसा परमो धर्म: से ' अहिंसक जीवन - शैली ' का जन्म हुआ एवं मानव का मानवीय स्वरुप विकसित होने लगा जो धीरे - धीरे कुछ समय पश्चात् स्वार्थी व्यवहार होने के करण मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु बन गया । जब मनुष्य ने मनुष्य को ही अपनी मनोविकारी पतित स्थित्ति से समाप्त करना आरम्भ कर दिया तो मानव का ' रक्षक से भक्षक ' वाला दानवीय चेहरा सामने आया तथा ' अहिंसक जीवन - शैली ' की असफलता को समाज ने न केवल देखा बल्कि ' शोषक - शोषण एवं शोषित ' की एक लम्बी श्रृंखला " बड़े भाग्य मानुस तन पावा ..." के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष के प्रति गहरे क्षोभ अर्थात् दीर्घकालीन शारीरिक एवं मानसिक यातना से भरी पीड़ा को झेलने में मजबूर हो गई । मानव - जीवन शैली एवं ' अहिंसक जीवन - शैली ' की दुहाई देने वाला समाज राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी के मानवीय पक्ष को जिसमें उन्होंने कहा था " वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे.. " जैसी उच्च विचारधारा को छोड़ - " वही पशु प्रवृत्ति है जो आप , आपेही चरे ..." को अपनाने की प्रवृत्ति की ओर बढ़ते हुए अब आधुनिक जीवन - शैली एवं पाश्चात्य जीवन - शैली के ' मोह पाश ' में बंध गया । इतनी विरोधाभासी स्थित्ति में श्रेष्ठ जीवन - शैली के रूप में यदि राजयोग के मूल सिद्धांत एवं व्यवहार को सामाजिक जीवन द्वारा आत्मसात कर लिया जाता है तो पुन: समाज को सत्कर्म की प्रवृत्ति की ओर लाया जा सकता है । जीवन के आचरण में ' उत्कृष्ट साधन ' का प्रयोग करते हुए आत्मा के गुण , शक्ति एवं मूल्य को स्वीकार करके स्वयं को उच्च मानसिक स्थित्ति में स्थापित किया जा सकता है जो जीवन के सत्कर्मों की प्रवृत्ति के मार्ग को अनुसरण करने में मददगार सिद्ध होगा ।

जीवन दर्शन की व्यापकता का बोध : सत्कर्म की प्रवृत्ति को जीवन में विकसित करने के लिए ' सत्य - कर्म ' के प्रति अनुराग उत्पन्न करना पड़ता है तब कहीं व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति , अनुसरण एवं अनुकरण की भूमिका का निर्वहन कर पाता है । मानव जीवन का सामाजिक पक्ष जहाँ व्यक्ति को धर्म और कर्म के सिद्धांत एवं व्यवहार से परिचित कराता है वहीं मनोवैज्ञानिक अवधारणा मन:स्थित्ति के विकास को इस प्रकार निर्देशित करती है कि व्यक्ति अध्यात्म एवं पुरुषार्थ को व्यवस्थित करने की चेष्टा करता है जिससे जीवन दर्शन का राजयोगी एवं मौन का स्वरुप प्रकट हो जाता है । भारतीय मनीषी के जीवन दर्शन की विराटता उस समय उजागर होती है जब स्वयं के बोध के लिए स्वयं का समर्पण लोक कल्याण की मंगल कामना से होकर गुजरता है क्योंकि उनके द्वारा जो कुछ समाज के लिए प्रदान किया गया वह सदा के लिए ' वन्दनीय

एवं पूजनीय ' बन गया । मानवीय दृष्टिकोंण का संवेदनशील स्वरुप इस समाज में तुलसीदास , रहीमदास , कबीरदास , महाकवि कालिदास एवं संत रविदास जैसे महान विद्वानों को उत्पन्न करता है जिनकी कर्म कहानी का पठन - पाठन , मनन - चिंतन एवं वर्णन व्यक्ति को जीवन दर्शन की व्यापकता का व्यावहारिक बोध करा देता है। वर्त्तमान युग में गांधी के अवशेष ढूंढते सामाजिक अनुसंधान आज सत्य , प्रेम एवं अहिंसा की बाट जोहने में लगे हैं तथा रवीन्द्रनाथ टेगौर को ' गीतांजली ' के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व जानने लगा क्योंकि कवीन्द्र - रवीन्द्र की अमर कृत्ति को साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त होना उनकी सम्पूर्ण कृत्तियों के प्रति समादर भाव का परिणाम है । पश्चिम के विद्वानों में खलील ज़िब्रान की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक ' द प्रोफेट ' जिसका हिंदी (संस्करण) अनुवाद के रूप में प्रस्तुत करके काका कालेलकर जी ने ' जीवन सन्देश ' को अमरत्व प्रदान कर दिया जिसकी श्रृंखलाबद्ध ईकाई के रूप में ' अंतिम सन्देश ' एवं ' हीरे और मोती ' मानवता के बोध और ईश्वरीय सत्ता की उपस्थित्ति को अत्यधिक प्रमाणिकता से स्पष्ट करके ' अहिंसक जीवन - शैली ' के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत्त करते हैं। विश्व जगत के दर्शन पटल पर विश्वविख्यात जापान के बौद्ध दार्शनिक ' डायसकू इकेदा ' एवं आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त अंग्रेज़ इतिहासकार ' जोज़फ अर्नाल्ड टायनबी ' जैसे विद्वानों ने अपने साहित्य एवं संवाद के माध्यम से मानवीय चिंतन को इतना सशक्त बना दिया कि उनके सहज वार्तालाप के बोध ने जनमानस के मध्य इस महान विचार को संप्रेषित कर दिया जिसमें - ' सृजन के लिए सृजन ' को उपयोगी सिद्ध करके उन्होंने महान दार्शनिक चिंतन को एक नवीन आयाम प्रदान किया । समाज में दार्शनिक बोध का एक पक्ष मानवता को स्थापित करने के लिए धर्म - क्षेत्र के द्वारा सत्कर्म की सात्विक मनोवृत्ति को इतने कुशल तरीके से समाज में रोपित करता है कि जगत में उन्हें श्रद्धा से याद किया जाता है और उनकी मंगलकारी सृजनात्मक निष्ठा से सर्व को प्रेरणा प्राप्त होती है । आत्मिक स्वरूप में - पंडित मदन मोहन मालवीय, जयदयाल गोयनका एवं घनश्याम दास बिड़ला के योगदान को ' अहिंसक जीवन शैली ' के निर्माण में शिक्षा, साहित्य एवं धर्म की रक्षा हेतु सदा स्मृत्ति पटल पर समाज उन्हें संजोकर रखेगा । समाज के मध्य रहते हुए भक्तिकालीन सभ्यता में श्रेष्ठ मानव समाज का उदाहरण इसलिए निर्मित्त हो सका क्योंकि वहां - भक्त प्रहलाद , मीरा का समर्पण एवं सुदामा का चरित्र अपने परम लक्ष्य से ओत - प्रोत रहते हुए आत्मा के साक्षात्कार को परमसत्ता से जोड़कर एकाकार स्वरुप का अनुभव करते थे । जीवन दर्शन की व्यापकता को अपने व्यावहारिक स्वरुप में अंगीकार करके सर्व मानव कल्याण का आधार स्तम्भ बनकर सेवा धर्म के महानाचार्य विनोवा भावे जी ने उपनिषदों का अध्ययन , स्थित प्रज्ञ दर्शन, गीता प्रवचन एवं गीताई जैसे महान ग्रंथों की रचना उनकी ' आत्म - दर्शन ' एवं अनुभूति की गहन स्थितियों का अभिव्यक्त स्वरुप है जो ' अहिंसक जीवन शैली ' में राजयोग के अवदान को सहजता से व्यक्त करती हैं । वर्त्तमान व्यवस्था के समक्ष दादी जानकी का जीवन - दर्शन और बोध की व्यावहारिकता उनके भाव , भासना , भावना एवं भाषा की पवित्रता का निर्मल उदाहरण है जो नित नूतन तरीके से राजयोग की परिभाषा को लोक मंगल के लिए सहजता से अभिव्यक्त करती हैं जिसकी सत्य निष्ठा , मैं कौन ? (आत्म स्वरुप) एवं मेरा कौन ? (परमात्म स्वरुप) का अनुभव सर्व मनुष्य आत्माओं को साक्षात्कार कराने का माध्यम बनता जा रहा है । आत्मा के अमरत्व का मौलिक चिन्तन ' मानव की मानवता ' को सुरक्षित एवं संरक्षित रख पाने में मददगार सिद्ध होता है जिसे सत्कर्म की प्रवृत्ति के निरंतर अनुसरण से प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि इसमें ' आत्मिक स्वरुप ' की स्थित्ति का व्यावहारिक सिद्धांत सदैव कार्य करता रहता है ।

मानव जीवन में अध्यात्म की स्थित्ति : स्वयं के सन्दर्भ में स्व - मूल्यांकन की आलोचनात्मक विधि अंतर्मन से इस सत्य को अभिव्यक्त कराती है जिसमें - ' अध्यात्म ही विश्व के सम्पूर्ण मनुष्य आत्माओं का धर्म ' बन जाए तो ' अहिंसक जीवन - शैली ' के लिए राजयोग का सबसे बड़ा अवदान सिद्ध हो जायेगा । व्यक्तिगत जीवन को जब सामाजिक जीवन की दृष्टि से देखा जाता है तब इस बात का अहसास रहता है कि सामाजिक विज्ञान से सम्बंधित जितने भी ज्ञान के पक्ष हैं उनको यदि व्यक्ति समझ लेता है तो सर्व समस्याओं का निराकरण संभव हो सकता है लेकिन व्यावहारिक परिवेश में ऐसा क्यों नहीं हो पाता है ? निजी जीवन के साथ सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि व्यक्ति को ' कुटुम्ब से लेकर वसुधैव कुटुम्बकम ' तक की विशाल श्रृंखला से अवगत कराती है जिसमें न्यूनतम से आरम्भ होकर अधिकतम की ऊंचाई पर पहुँचने वाले मनुष्य अपनी धर्म - कर्म एवं भक्ति - भाव की कहानी को सर्व मानव आत्माओं तक सहज ही पहुंचा देते हैं । अब प्रश्न उठता है कि समाज में ऐसे कौन से मनुष्य हैं जो स्वयं के भीतर उत्पन्न सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण और धीरे - धीरे अनुकरण की स्थितियों में स्वयं को स्थापित करने के प्रयास में जुट जाएं तथा स्व - संवाद के द्वारा स्वयं को यह समझाते रहें कि भक्ति का प्रतिफल ही ज्ञान है अर्थात् आत्मा में श्रद्धा का जन्म हो गया और धर्म का यह सिद्धांत है कि - ' श्रद्धावान लभते ज्ञानम ' । जीवन में एक समय ऐसा भी आता है कि व्यक्ति अपनी ओर देखने का प्रयास करता है और इतनी सूक्ष्म (पैनी) दृष्टि से देखता है कि जीवन चर्या में अध्यात्म को सम्मिलित कर लेता है तथा आत्मा के उत्थान हेतु पुरुषार्थ के प्रति संवेदनशील हो जाता है । यहाँ एक तर्क यह भी दिया जा सकता है कि लम्बे समय तक पूजा -

पाठ , उपासना , धर्म के प्रति आस्था , कर्म में विश्वास करने के पश्चात् कई बार स्थूल प्राप्ति की गणना करके संतुष्ट हो जाना और जीवन के व्यवहार में गुणात्मक बढ़ोतरी की प्राप्ति नहीं होने के कारण भी मनुष्य अध्यात्म अर्थात् आत्मा के अध्ययन की ख़ोज में अध्यात्म के द्वार तक पहुँच गया। आध्यात्मिक जगत की कार्य प्रणाली एवं आत्मा के संबंध में की जाने वाली विभिन्न विवेचनाएं मानव जीवन के लिए समझने , सीखने एवं अनुभव करने के मार्ग को प्रशस्त करती हैं जिसके परिणाम स्वरुप व्यक्ति आत्मिक स्मृति, स्थिति, अवस्था एवं स्वरुप द्वारा आनंद की स्थिति में परिवर्तित हो जाता है । मानव जीवन का गतिशील व्यवहार तीव्र पुरुषार्थ होने के कारण अपने मस्तिष्क एवं हृदय से जुड़ी शक्तियों अर्थात् बुद्धिमत्ता के तार्किक स्वरूप तथा भावना के सांकेतिक स्वरुप को स्वीकार करते हुए स्वयं को संतुष्ट करने के साथ सर्व को संतुष्ट करने के क्रियाकलाप में संलग्न होता है । स्वयं की गहन ख़ोज का परिणाम व्यक्ति को ज्ञान , योग , धारणा एवं सेवा के विराट स्वरुप की प्राप्ति तो हो गयी परन्तु यह सभी कुछ स्मृति का प्रमाण बनकर रह गया जिसने अंततः व्यक्तित्व में अभिमान एवं स्वाभिमान के अंतराल को समाप्त कर दिया । मानव जीवन में सत्कर्म की प्रवृत्ति के अनुसरण की समझ धर्म से प्राप्त हुई तथा श्रेष्ठ कर्म से अध्यात्म तक व्यक्ति पहुँच गया और जीवन के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया को अपनाने के पश्चात् आत्मिक उत्कर्ष को भी प्राप्त कर लिया लेकिन आत्मा के अमरत्व का सन्दर्भ एवं प्रसंग अभी शेष है।

आध्यात्मिक अनुसंधान अध्ययन की मन: स्थिति मनुष्य आत्माओं को राजयोग से मौन की ओर ले जाती है जहाँ से ‘ आत्म – तत्व ’ को ‘ ज्ञान - तत्व ’ से मुक्ति प्राप्त हो जाती है तथा बुद्धि से जुड़ा मानव मस्तिष्क ‘ शांति की अवस्था ’ से गुजरने लगता है और साधक का मौन मनुष्य को ‘ बोध - तत्व ’ से जीवन मुक्ति प्रदान कर देता है जिससे हृदय से संबद्ध ‘ भाव ’ मौन के स्वरुप में परिणित हो जाता है। अत: आत्मा के अमरत्व का भाव जगत मनुष्य को स्वयं के ‘ सर्वांगीण विकास ’ की प्रक्रिया में ले जाने का कारक बनता है और यह आत्मा की उच्चता व्यक्ति को सत्कर्म की प्रवृत्ति के अनुसरण के लिए चिरन्तर रूप से प्रेरणा प्रदान करती रहती है।

उपसंहार (निष्कर्ष) : इस प्रकार मानव जीवन शैली के विकास , उत्थान एवं उत्कर्ष की प्रक्रिया में धर्म , अध्यात्म एवं राजयोग का विशेष योगदान होता है जिसका प्रकट भाव व्यक्ति के कर्म की श्रेष्ठता द्वारा व्यावहारिक जीवन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सम्पूर्ण मानव समाज तक पहुँचता है । जगत में मनुष्य की उपस्थिति और ‘ मानव जीवन शैली ’ की गतिशीलता के उज्जवल स्वरुप को जब व्यक्ति अपने कर्तव्य की स्वीकृत्ति समझकर अंतकरण से अपनाता है तो उसको प्राप्त होने वाले अधिकार स्वत: प्राप्त हो जाते हैं। ‘ अहिंसक जीवन शैली ’ की गरिमा किसी मनुष्य से छिपी नहीं है और धर्म के क्षेत्र में इस सत्यता को व्यक्ति के व्यवहार से जोड़कर देखा एवं समझा जाता है इसलिए अहिंसा को ही परम धर्म के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गयी। उन्नतिशील प्राणी के रूप में मानव को सम्मान प्राप्त होना व्यक्ति के ‘ शक्तिशाली मस्तिष्क क्षमता ’ एवं ‘ संवेदनशील हृदय भाव ’ का परिणाम है जिसमें सोचने , समझने तथा अनुभव करने का गुण विद्यमान होता है। सृष्टि में मनुष्य के ‘ अस्तित्व की स्थिति ’ को विकसित करने का कार्य ‘ धर्म - कर्म ’ के सिद्धांत एवं व्यवहार द्वारा नीतिगत तरीके से संपन्न हो सका क्योंकि इस मार्ग में स्व - कल्याण के सात्विक उपाय सम्मिलित रहते हैं जो व्यक्ति को परहित की ओर ले जाने में अभिप्रेरणा प्रदान करते रहते हैं । जीवन में एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होती है जब व्यक्ति को ‘ अध्यात्म -पुरुषार्थ ’ का सहारा लेना पड़ता है क्योंकि उसे लगता है कि आत्मा के उत्थान के लिए कुछ अलग से प्रयास करना चाहिए तब वह आत्मिक उन्नयन हेतु आध्यात्मिक अनुसंधान करते हुए सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण एवं अनुकरण करने लगता है जो उसके सर्वांगीण विकास से जुड़ा होता है। स्वयं के अस्तित्व की रक्षा , निजी जीवन के विकास का पक्ष एवं आत्मा के उत्थान की स्थिति के पश्चात् स्व - स्वरुप को चरम उत्कर्ष पर देखने की इच्छा शक्ति व्यक्ति को ‘ राजयोग - मौन ’ की ओर सहज ही ले आती है जहाँ से ‘ आत्मा के अमरत्व का अध्ययन ’ मनुष्य को आनंद की अवस्था में पहुंचा देता है। राजयोग का वैविध्य और मानव जीवन - शैली का सहसंबंध अत्यधिक पवित्र होता है जिसमें धर्म सत्ता का भाव अहिंसक बनने के स्वरुप को भय के कारण नहीं बल्कि आध्यात्मिक शक्तियों की स्वीकृति से प्रेम स्वरुप होकर साधक का साध्य तक पहुँचने का अनुष्ठान है । सत्कर्म की प्रवृत्ति का अनुसरण किसी भी देश , काल एवं परिस्थिति में किया गया हो , वह उस समय के तपस्वी महान संतों एवं उनके द्वारा रचित पवित्र ग्रन्थों तथा पथ प्रदर्शन के लिए स्थापित श्रेष्ठ पंथों द्वारा इसलिए पूर्णता को प्राप्त हो सका क्योंकि उन्होंने - मन , वचन , कर्म , समय , संकल्प , संबंध एवं स्वप्न की पवित्रता को धर्म , अध्यात्म एवं राजयोग के सामंजस्य से सदैव बना कर रखा। श्रेष्ठ जीवन शैली का जीवन में आगमन उच्च कोटि के आरंभ का प्रतीक है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की सम्भावना को सुनिश्चित हो जाने की स्थिति तक पहुँचाने में मददगार होता है लेकिन पुरुषार्थ की पवित्रता को नैतिक होने की कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है जिसमें उर्ध्वगामी एवं अधोगामी स्थिति का आंतरिक संघर्ष सबसे बड़ी बाधा के रूप में कार्य करता है। अनुसंधान अध्ययन

की पृष्ठभूमि जब अपने उज्जवल स्वरुप में आध्यात्मिक उत्कृष्टता का प्रस्फुटन बन जाती है तब साधक (अध्येता) के लिए - नियम - संयम , जप - तप , ध्यान - धारणा , स्वाध्याय - सत्य , प्रेम - अहिंसा , राजयोग - मौन अर्थात् अन्तर्मुखी हो जाने का व्यावहारिक पुरुषार्थ जीवन के निष्कर्ष के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार जीवन में आत्मा के अमरत्व की अनुभूति को ' आत्म - स्वरुप ' में प्राप्त कर लेना आध्यात्मिक पुरुषार्थ में सत्कर्म की प्रवृत्ति के अनुसरण का उपलब्धिपूर्ण परिणाम है जो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास को जगत के सम्मुख पूर्ण विश्वसनीयता से प्रकट करता है जिसमें धर्म , अध्यात्म एवं राजयोग के अनुकरणीय प्रमाण उदाहरण के रूप में प्राप्त होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भावे , संत विनोवा (1978) *गीता प्रवचन* , वाराणसी , *प्रकाशन ; सर्व सेवा संघ*, राजघाट ।
2. भावे , संत विनोवा (2014) *स्थितप्रज्ञ - दर्शन* , वाराणसी , *प्रकाशन ; सर्व सेवा संघ*, राजघाट ।
3. भावे , संत विनोवा (1980) *उपनिषदों का अध्ययन* , वाराणसी , *प्रकाशन ; सर्व सेवा संघ*, राजघाट ।
4. गाँधी , महात्मा (2013) *अहिंसा की ताकत* , वाराणसी , सर्व सेवा संघ - प्रकाशन ।
5. गाँधी , महात्मा (1975) *सत्य के प्रयोग , आत्मकथा,* अहमदाबाद , प्रकाशक ; नवजीवन प्रकाशन मंदिर ।
6. गाँधी , महात्मा , *सत्य ही ईश्वर है* (1983) अहमदाबाद , प्रकाशक ; नवजीवन प्रकाशन मंदिर ।
7. रमण , महर्षि (2014) *उपदेश सार* , स्वामी अनुभवानंद , भोपाल , प्रकाशक ; इंद्रा पब्लिशिंग हाउस ।
8. विदेहत्मानंद , स्वामी (2002) *स्वामी विवेकानंद और उनका अवदान* , कोलकाता , अद्वैत आश्रम (प्रकाशन विभाग)
9. रंजन , राजीव (2012) युगदृष्टा विवेकानंद , दिल्ली , प्रकाशक : सत्साहित्य प्रकाशन ।
10. शर्मा , ए . आर . के (2013) स्वामी विवेकानंद के नेतृत्व सूत्र , नागपुर (महाराष्ट्र) प्रकाशक ; श्री शारदा बुक हाउस ।
11. वैकटरामैया , मु. (1998) *श्री रमण महर्षि से बातचीत.* आगरा : प्रकाशक शिव लाल एड अग्रवाल कंपनी , आगरा ।
12. लॉक , जॉन (1981)' *मानव बोध* ' , जयपुर : हिन्दी ग्रंथ अकादमी , प्रथम संस्करण ।
13. शर्मा , पंडित श्री राम (1998) *वाङ्मय* , *साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान*, मथुरा प्रकाशक अखंड ज्योति संस्थान।
14. शुक्ल , अजय , (2009) व्यवहार , संबंध और व्यावहारिकता , भोपाल (म. प्र.) प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था ।
15. शुक्ल , अजय (2010) परिवर्त्तन की अंतर्दृष्टि , भोपाल (म. प्र.) प्रकाशक : मानवीय विकास संस्था ।
16. शुक्ल , अजय (2011) विकास का मनोविज्ञान , भोपाल (म. प्र.) , प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था ।
17. शुक्ल , अजय (2012) जीवन के सृजनात्मक पक्ष , भोपाल (म. प्र.) , प्रकाशक ; मानवीय विकास संस्था ।
18. हसीजा ,जगदीश चंद , योग की विधि और सिद्धि , प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय , माउन्ट आबू ।
19. भगेरिया , दामोदर : (2012) ' श्रीमदभगवद्गीता मर्म और सन्देश ' जयपुर , प्रकाशक ; गीता से जुड़ें।
20. पांडेय , पुष्पा (2012) श्रीमदभगवद्गीता का सत्य सार , जबलपुर (म . प्र.) , प्रकाशक ; बाबा पब्लिकेशन ।
21. जोशी , रजनीकांत (2004) जीवन - मीमांसा , अहमदाबाद (गुजरात) , अमृता प्रकाशन ।